जैन
# पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

**द्वेषमूलक हिंसा भी मूलतः रागमूलक ही है।**
**- बिन्दु में सिन्धु, पृष्ठ-17**

वर्ष : 25, अंक : 9
अगस्त (प्रथम) 2002

**सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल
**प्रबन्ध सम्पादक :** पण्डित संजीवकुमार गोधा

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

## पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द सम्पन्न

**उदयपुर :** यहाँ श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन दशा नरसिंहपुरा चेरिटेबल ट्रस्ट केशवनगर द्वारा दिनांक 14 जून से 20 जून 2002 तक 1008 भगवान आदिनाथ दिग. जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन किया गया।

नवीन जिनमंदिर में प्रथम तल पर मूलनायक भगवान आदिनाथ के साथ भगवान पार्श्वनाथ एवं भगवान महावीर की भाववाही प्रतिमायें तथा द्वितीय मंजिल पर भगवान शान्तिनाथ, भगवान कुन्थुनाथ व भगवान अरनाथ की खड़गासन प्रतिमायें विराजमान की गईं।

इसी प्रसंग पर आचार्य कुन्दकुन्द स्वाध्याय भवन व पाठशाला का उद्घाटन किया गया।

महोत्सव की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा विधि बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद के निर्देशन में सहयोगी प्रतिष्ठाचार्य पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पं. राजकुमारजी शास्त्री गनोड़ा, पं. ऋषभकुमारजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पं. अजितकुमारजी शास्त्री अलवर, पं. रतनचन्दजी शास्त्री कोटा, पं. सुकुमालजी झांझरी उज्जैन, पं. नागेशकुमारजी पिड़ावा, पं. मनीषकुमारजी शास्त्री पिड़ावा, पं. सुबोधजी शास्त्री शाहगढ़, पं. राकेशजी शास्त्री परतापुर, पं. निलयकुमारजी शास्त्री टीकमगढ़ द्वारा सम्पन्न करायी गई।

सभी कार्यक्रम पं. अशोकजी लुहाड़िया अलीगढ़ के कुशल निर्देशन में सम्पन्न हुये ।

इस मंगलमय प्रसंग पर प्रसिद्ध विद्वान डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी, पण्डित सुशीलकुमारजी इन्दौर, पण्डित अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित शैलेशभाईजी तलोद, पण्डित धनसिंहजी पिड़ावा, पण्डित महावीरजी टोकर के सारगर्भित प्रवचनों का लाभ समाज को प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर सीमंधर संगीत सरिता छिन्दवाड़ा व टोडरमल संगीत सरिता जयपुर ने आध्यात्मिक भक्ति गीतों के माध्यम से भक्ति रस का आस्वादन कराया।

प्रथम दिन श्री भागचन्दजी कालिका परिवार द्वारा झण्डारोहण किया गया। जन्म-कल्याणक के अवसर पर मैनपुरी से आया विद्युतमय विशेष पालना जनता के आकर्षण का केन्द्र रहा।

महारानी मरुदेवी और महाराजा नाभिराय बनने का सौभाग्य श्रीमती द्रोपदीदेवी व श्री मोतीलालजी भादावत को प्राप्त हुआ। विधि-नायक भगवान को श्री गेंदालालजी फान्दोत ने विराजमान किया। यज्ञनायक श्री किस्तूरचन्द सिंघवी, सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री/श्रीमती कन्हैयालालजी दलावत, कुबेर श्री/श्रीमती जीवन्धरकुमारजी जेतावत बने। इनके अतिरिक्त भी अनेक महानुभावों ने इन्द्र-इन्द्राणी व राजा-रानी बनकर भगवान के जिनबिम्ब भेंटकर्त्ता व विराजमान कर्त्ता बनकर सहयोग प्रदान किया।

सम्पूर्ण कार्यक्रम में उदयपुर संभाग की सम्पूर्ण फैडरेशन शाखाओं तथा अन्य संस्थाओं का सहयोग तो रहा ही साथ ही साथ केशवनगर के भाई-बहिनों की 'युवा परिषद' का सहयोग तथा उदयपुर संभाग की श्री कुन्दकुन्द वीतराग-विज्ञान शिक्षण समिति का सहयोग अत्यंत सराहनीय था।

इस अवसर पर साहित्य में 50 प्रतिशत की छूट रखी गई, जिससे लगभग 40-50 हजार रुपयों का सत्साहित्य घर-घर पहुँचा। डॉ. भारिल्ल की **समयसार का सार** की कैसिटों का सेट तथा अन्य विद्वानों के प्रवचनों की लगभग 32 हजार रुपयों की कैसिटें बिकीं। **- राकेश दोशी**

### ब्र. यशपालजी द्वारा धर्मप्रभावना

**देऊलगाँवराजा** (महाराष्ट्र) : अखिल भातीय जैन युवा फैडरेशन देऊलगांवराजा एवं मुमुक्षु मंडल देऊलगांवराजा के विशेष आग्रह पर यहाँ पधारे ब्र. यशपालजी द्वारा दिनांक 24 जून से 13 जुलाई 2002 तक नियमित रूप से प्रवचन कक्षाओं का आयोजन कर महती धर्मप्रभावना की गई।

ब्र. यशपालजी द्वारा यहाँ प्रातः एवं सायंकाल गुणस्थान विवेचन पर सारगर्भित मार्मिक कक्षाएँ ली गईं। सायंकालीन प्रवचन के पश्चात् स्थानीय विद्वान नितिनकुमारजी कोठेकर शास्त्री द्वारा प्रवचन एवं कक्षाओं पर आधारित तत्काल प्रश्नमंच तथा 'खोजोगे तो पाओगे' इत्यादि तत्त्वज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम में स्थानीय लगभग 150 श्रावक-श्राविकाओं तथा बालकों ने भाग लिया तथा अनेकों ने इस कार्यक्रम से प्रभावित होकर आजीवन स्वाध्याय का व्रत लिया। स्थानीय विद्वान पंडित विजयकुमारजी आह्वाने शास्त्री, पंडित उमाकांतजी बंड शास्त्री का इस कार्यक्रम में सक्रिय सहयोग रहा। ज्ञातव्य है कि उक्त स्थानीय विद्वानों द्वारा यहाँ पर नियमित प्रवचन, पाठशाला एवं प्रौढ़ कक्षाओं का संचालन किया जाता है। **ह्न पद्मकुमार डोणगांवकर**

सम्पादकीय –

# हरिवंशपुराण : एक अनुशीलन

11

– रतनचन्द भारिल्ल

इन 9 निधियों का वर्णन ग्यारहवें सर्ग के श्लोक 114 से 123 में निम्नप्रकार आया है। पहली कालनिधि में ज्योतिषशास्त्र, निमित्तशास्त्र, न्यायशास्त्र, कलाशास्त्र, व्याकरणशास्त्र, एवं पुराण आदि का सद्भाव था अर्थात् कालनिधि से इन सबकी प्राप्ति होती थी। दूसरी महाकाल निधि में विद्वानों के द्वारा निर्णय करने योग्य चंपलोह आदि नाना प्रकार के लोहों का सद्भाव था अर्थात् उससे इन सबकी प्राप्ति होती थी। तीसरी पाण्डुक निधिमें शालि, ब्रीहि, जौ आदि समस्त प्रकार के धान्य तथा कडुए चिरपरे आदि पदार्थों का सद्भाव था। चौथी माणवक निधि, कवच, ढाल, तलवार, बाण शक्ति, धनुष तथा चक्र आदि नाना प्रकार के दिव्य शस्त्रों से परिपूर्ण थी। पाँचवीं सर्प निधि, शय्या, आसन आदि नाना प्रकार की वस्तुओं तथा घर में उपयोग आनेवाले नाना प्रकार के भाजनों की पात्र थी। छठी सर्वरत्न निधि इन्द्रनील मणि, महानील मणि, वज्रमणि आदि बड़ी-बड़ी शिखा के धारक उत्तमोत्तम रत्नों से परिपूर्ण थी। सातवीं शंखनिधि, भेरी, शंख, नगाड़े, वीणा, झल्लरी और मृदंग आदि आघात से तथा फूँककर बजाने योग्य नाना प्रकार के बाजों से पूर्ण थी। आठवीं पद्मनिधि पाटाम्बर, चीन, महानेत्र, दुकूल, उत्तम कम्बल तथा नाना प्रकार के रंग-बिरंगे वस्त्रों से परिपूर्ण थी। और नौवीं पिंगलनिधि कड़े तथा कटिसूत्र आदि स्त्री-पुरुषों के आभूषण और हाथी, घोड़ा आदि के अलंकारों से परिपूर्ण थी। ये नौ की नौ निधियाँ कामवृष्टि नामक गृहपति के आधीन थीं और सदा चक्रवर्ती के समस्त मनोरथों को पूर्ण करती थीं।

भरत चक्रवर्ती के वैभव का वर्णन इस सर्ग के श्लोक 124 से 132 तक इसप्रकार किया है। एक से बढ़कर एक तीन सौ साठ रसोइये थे जो प्रतिदिन कल्याणकारी सीथोंसे युक्त आहार बनाते थे। एक हजार चावलों का एक कवल (ग्रास) होता है, ऐसे बत्तीस कवल प्रमाण चक्रवर्ती का आहार था, सुभद्रा का आहार एक कवल और एक कवल अन्य समस्त लोगों की तृप्ति के लिए पर्याप्त था। चक्रवर्ती के निन्यानवे हजार चित्रकार थे, बत्तीस हजार मुकुटबद्ध राजा थे, उतने ही देश थे और देवांगनाओं को भी जीतनेवाली छियानवे हजार स्त्रियाँ थीं। एक करोड़ हल थे, तीन करोड़ कामधेनु गायें थी, वायु के समान वेगशाली अठारह करोड़ घोड़े थे, मत्त एवं धीरे-धीरे गमन करनेवाले चौरासी लाख हाथी और उतने ही उत्तम रथ थे। अर्ककीर्ति और विवर्धन को आदि लेकर पाँच सौ चरम शरीरी तथा आज्ञाकारी पुत्र थे। 1. भाजन, 2. भोजन, 3. शय्या, 4. सेना, 5. वाहन, 6. आसन, 7. निधि, 8. रत्न, 9. नगर और 10. नाट्य ये दस प्रकार के भोग थे। सेवामें निपुण, प्रमादरहित एवं परमहितकारी सोलह हजार गणबद्ध देव सदा उनकी सेवा करते थे।

यद्यपि राजाधिराज चक्रवर्ती इस प्रकार के विभव से सहित थे तथापि उनकी बुद्धि शास्त्रों का अर्थ विचारने में निरन्तर रहती थी और दुर्गतिरूपी ग्रह का सदा निग्रह करते रहते थे। भुजाओं से शत्रुओं का मंथन करनेवाले चक्रवर्ती ने यद्यपि 32 हजार राजाओं को बिखेरकर उनका अभिमान नष्ट कर दिया था तथापि स्वयं अभिमान से रहित थे। जिनका वक्ष:स्थल श्रीवृक्ष के चिह्न से सहित था, जो चौंसठ लक्षणों से युक्त थे, जो इंद्र की लक्ष्मी को तिरस्कृत करनेवाले थे और जो नित्यमेव अखण्डित पौरुष को धारण करनेवाले थे ऐसे स्वयंभूपुत्र सोलहवें कुलकर भरत महाराज जब भरत क्षेत्र सम्बन्धी छह खण्डों की भूमिकानुसार नीतिपूर्वक शासन करते थे तब धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में यथेष्ट अनुराग रखनेवाले लोग निर्विघ्न रूप से निरन्तर आनन्द का उपभोग करते थे। जो अपनी लक्ष्मी के द्वारा बिना वचन बोले ही अन्य मनुष्यों के लिए पूर्वजन्म में किये हुए धर्म का फल दिखला रहे थे ऐसे भरत महाराज किनके लिए धर्म के उपदेशक नहीं थे। अर्थात् उनकी अनुपम विभूति को देखकर लोग अपने आप समझ जाते थे कि यह इनके पूर्वकृत धर्म का फल है इसलिए सबको धर्म करना चाहिए। इस प्रकार पूर्वजन्म में आचरण किये हुए धर्म के माहात्म्य से जो स्वयं अतिशय महान थे, पौरुष से युक्त थे, सुख के भण्डार थे, लोगों के लिए कल्पवृक्षस्वरूप थे, सम्यग्दर्शनरूपी रत्नसे रंजित मनोवृत्ति से युक्त थे और लक्ष्मी से इन्द्र के समान थे ऐसे चक्रवर्ती भरत सुदृढ़ मन को जिनमार्ग में लीन रखने लगे।

**द्वादश सर्ग में –** कहा गया है कि चक्रवर्ती भरत समवशरण में जाकर निरंतर भगवान ऋषभदेव की वन्दना करते थे एवं त्रेसठ शलाका पुरुषों के पुराण सुनते थे। उन्होंने चौबीस तीर्थंकरों के लिए अपने महलों के द्वारों पर शिर का स्पर्श करनेवाली रत्न निर्मित चौबीस घंटियों से ऐसी वन्दनमालायें बंधवायी थीं, जिनका निकलते समय शिर से स्पर्श होता था और घंटियों की ध्वनी सुनकर भरतजी को 24 तीर्थंकरों का स्मरण हो जाता था। इसतरह वे तीर्थंकरों को परोक्ष नमस्कार करते थे।

एक बार चक्रवर्ती भरत के साथ उनके विवर्द्धन कुमार आदि नौ सौ तेईस राजकुमार (पुत्र) भगवान के समवशरण में पहुँचे। उन्होंने पहले कभी तीर्थंकर के दर्शन करना तो बहुत दूर, वे तो इससे पूर्व त्रस पर्याय में भी नहीं आये थे, स्थावर (एकेन्द्रिय) पर्यायों में ही जन्म-मरण के महाक्लेश को प्राप्त हुए थे। वे सब अनादि मिथ्यादृष्टि थे। अत: समवशरण का वैभव देखकर वे सब आश्चर्यचकित रह गये । गजब की बात यह है कि भली होनहार के फलस्वरूप उन्होंने अन्तमुहूर्त में ही संयम धारण कर लिया और भगवान ऋषभदेव से भी पहले मुक्ति को प्राप्त हो गये।

भरत के पुत्रों की विचित्र घटना से यह स्पष्ट होता है कि भवितव्य ही बलवान है। तदनुसार ही पाँचों समवाय स्वत: मिल जाते हैं। कहा भी है –

**तादृशी जायते बुद्धिर्व्यवसायोऽपि तादृशा:।**
**सहायास्तादृश: सन्ति यादृशी भवितव्यता ।।**

ज्ञातव्य है कि महाराज भरत के साम्राज्य में ही सर्वप्रथम स्वयंवर प्रथा का प्रारंभ हुआ। **(क्रमश:)**

## कहान सन्देश

# मोक्षमार्ग का प्रथम सोपान

**(सम्यग्दर्शन पुस्तक के आधार से )**

**( 105 वीं किस्त )**

**(गतांक से आगे .....)**

## मोक्षार्थी का मुक्त होने का उल्लास

यह भगवान आत्मा ज्ञानस्वभावी है, पर का अकर्ता एवं अभोक्ता है; परन्तु अज्ञानी ने आजतक एक क्षण को भी अपने इस स्वभाव को लक्ष्य में नहीं लिया। इसकारण ज्ञान के समझने में कठिनाई होती है, विषयवस्तु कठिन लगती है। इसकारण बाह्य क्रिया में धर्म मानकर संतुष्ट हो लेता है; परन्तु ऐसी बाह्य क्रियाएँ तो इस जीव ने अनन्तबार कीं फिर भी संसार के दु:ख से मुक्ति नहीं मिली।

जब यह जीव आत्मस्वभाव की रुचि से तत्त्वज्ञान का अभ्यास करेगा तो इसके लिये आत्मा समझना भी सरल हो जायेगा। अपने स्वभाव की बात कठिन नहीं होती। प्रत्येक आत्मा में समझने की सामर्थ्य है; किन्तु अपने अन्दर से धर्म की बात समझने की रुचि एवं उल्लास होना चाहिए।

देखो ! जब बैलों को खेत पर जोतने को ले जाते हैं तो धीरे-धीरे जाते हैं, वे जानते हैं कि खेत में जुतना है और जब शाम को छूटकर घर आते हैं तो उत्साह से दौड़-दौड़ कर आते हैं; क्योंकि वे यह जानते हैं कि अब हरी-भरी घास खाने को और रातभर विश्राम करने को मिलेगा। देखो ! जब बैल जैसा जानवर (पशु) भी इतना समझता है तो क्या हमें मुक्त होने की बात सुनने-समझने में उत्साह नहीं आना चाहिए। अवश्य ही आना चाहिए।

पात्र जीवों को तो आत्मा की बात सुनकर अपने स्वभाव की सामर्थ्य की बात सुनकर अन्तर से मुक्ति का उल्लास आता ही है और उसका स्वभाव सन्मुख परिणमन अत्यन्त वेग से होता है।

भाई ! जितना काल संसार में रखड़ते हो गया, उतना काल मोक्ष के उपाय में नहीं लगेगा; क्योंकि स्वभाव का वीर्य, विकार से अनन्त गुणा बलवान होता है। इसकारण अल्पकाल में ही मुक्ति की साधना हो जायेगी। बस ! उत्साह लाने की जरूरत है।

हे जीव ! महापुण्य के योग से तूने यह मनुष्यभव प्राप्त किया है। इस अमूल्य मानव जीवन में यह जीव यदि सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र रूप पवित्र भाव कर सके तो ही इस देह को शुभदेह कहा जा सकता है। आत्मा की जो आन्तरिक शक्ति है, आत्मा का जो आन्तरिक वैभव है वह कभी आत्मा से पृथक नहीं किया जा सकता। धन-वैभव आदि आत्मा का वैभव नहीं है, इसे पाने में किसी की चतुराई नहीं चलती। यह तो पूर्व प्रारब्ध के अनुसार मिलते-बिछुड़ते रहते हैं। ये कोई सुख-दु:ख के कारण नहीं हैं। जीव स्वयं अपनी भूल से पराश्रयबुद्धि से दु:खी होता है।

इसके विपरीत जो आत्मा की पहिचान करके स्वाश्रयभाव प्रगट कर लेता है तो उसे स्वयं से स्वयं का कल्याण होता है। परंतु मोही प्राणी अपनी पहिचान नहीं करता, पर में ही अटका रहता है। जिसप्रकार हिरण अपनी नाभि में ही विद्यमान कस्तूरी का विश्वास नहीं करता, उसीप्रकार अज्ञानी (मोही) अपने आत्मा में ही मौजूद आत्मा की असीमित शक्तियों को नहीं पहिचानता, उनका विश्वास नहीं करता, जबकि आत्मा में तीन लोक का नाथ बनने की ताकत भरी पड़ी है।

आत्मा को पहचानने का अवसर मुख्यत: मनुष्य देह में ही होता है; परंतु जबतक आत्मतत्त्व की महिमा को जाना नहीं, तबतक व्रत-तप-दान या यात्रा वगैरह करने से क्या होनेवाला है ?

यह संसार बहुत दु:खों से भरा है। ज्ञानियों का प्रयोजन इस संसार सागर से पार पाने का है। मुक्ति प्राप्त करके ज्ञानी मुक्ति में विराजमान हो जाते हैं। मोक्ष जब भी मिलेगा, इसी मानव देह से ही मिलेगा, इसके सिवाय किसी अन्य देह से मोक्ष प्राप्त नहीं होता।

यह अज्ञानी अपनी पहिचान तो करता नहीं है और मैं पर का भला कर दूँ ह्न ऐसा मानकर अभिमान करता है। जबकि पर में आत्मा का कुछ भी अधिकार नहीं चलता। शरीर में रोग होता है, उसे टालने की इच्छा होते हुए भी वह रोग टलता नहीं है। रोगी होने की इच्छा न होते हुए भी रोगी हो जाते हैं। इसतरह आत्मा की इच्छा पर में कुछ काम नहीं आती। फिर भी अज्ञानी पर की इच्छा करता है, बस इसीकारण दु:खी है।

अहा ! जिन्हें शरीर से भिन्न चैतन्यमूर्ति आत्मा का भान नहीं है और जो पर में ममता करते हैं, वे सब जीव इस संसार में बहुत दु:खी हैं। राज्य, लक्ष्मी, स्त्री-पुत्र, इज्जत आदि होते हुये भी पर की ममता के कारण वे दु:खी हैं। जीव को निर्धनता का दु:ख नहीं है; किन्तु पर में ममता के कारण दु:ख है। जीव का पर में ममत्वभाव ही संसार है और उसी का दु:ख है। परवस्तु में सुख-दु:ख नहीं है। जब जीव परलोक में जाता है तो शरीर आदि तो सब यहीं पड़े रह जाते हैं। वे जीव के साथ नहीं जाते। जीव मात्र अपने ममत्वभाव को ही साथ लेकर जाता है। वह ममत्वभाव ही संसार है।

ज्ञानी सन्त आत्मा को पहिचानकर इस दु:खमय संसार से तरकर संसार से पार होने का प्रयोजन साधते हैं और मोक्षदशा प्रकट करते हैं। आत्मा का परिपूर्ण सुख मोक्षदशा में ही है। जो जीव उसे पहिचानकर आत्मस्वरूप में एकाग्र होते हैं, उन्हें मोक्षदशा में वह सुख प्रकट हो जाता है। **(क्रमश:)**

## शिविर सानन्द सम्पन्न

**करेली :** कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान तथा अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा श्रुतपंचमी के प्रसंग पर सीमंधर जिनालय में 9 से 15 जून तक आध्यात्मिक एवं बाल संस्कार शिविर का सफल आयोजन किया गया।

शिविर में पं. विमलचन्दजी झांझरी उज्जैन, पं.अभिनन्दनजी खनियांधाना, पं. प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, पं. राजेन्द्रजी जबलपुर, पं. सुबोधजी सिवनी, पं. सुबोधजी उज्जैन, पं. मनीष शास्त्री रहली, पं. अरहंतप्रकाश जैन, ब्र.सुकुमालजी उज्जैन, पं. रत्नेश मेहता, पं. गजेन्द्र शास्त्री, पं. मनोज शास्त्री, पं. आशीष शास्त्री एवं स्थानीय विद्वान पं. कपूरचन्दजी, पं. मोतीलालजी, पं. मनोजजी शास्त्री, पं. प्रवेशजी शास्त्री, पं. अभिषेक शास्त्री के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

इस अवसर पर श्रुतस्कंध विधान का आयोजन, श्रुतस्कंधों की वेदी पर स्थापना तथा आचार्य धरसेन व आचार्य कुन्दकुन्द के चरणों की स्थापना की गई।

शिविर में लगभग 1 हजार मुमुक्षुओं ने लाभ लिया।

सम्पूर्ण आयोजन में अ.भा.जैन युवा फैडरेशन करेली, महिला फैडरेशन करेली और चन्द्रप्रभ वीतराग-विज्ञान पाठशाला का उल्लेखनीय सहयोग रहा।

**- मुकेश जैन केसलीवाले**

## रविवारीय गोष्ठी का सफल आयोजन

**जयपुर** : श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर में प्रत्येक रविवार को आयोजित की जानेवाली रविवारीय गोष्ठी के क्रम में सत्र 2002-03 की **प्रथम** रविवारीय गोष्ठी दिनांक 7 जुलाई 2002 को सानन्द सम्पन्न हुई। इस गोष्ठी का विषय **वीतरागी देव : एक अनुशीलन** रखा गया तथा अध्यक्षता डॉ. नेमचंद्रजी जैन ने की। गोष्ठी के श्रेष्ठ वक्ता का प्रथम पुरस्कार विजय यादव को एवं द्वितीय पुरस्कार रवीन्द्र काले को प्रदान किया गया । संचालक संतोष सावजी शास्त्री तथा संयोजक महावीर मांगुलकर शास्त्री थे।

गोष्ठी के उक्त क्रम में **द्वितीय** रविवारीय गोष्ठी का आयोजन दिनांक 21 जुलाई 2002 को किया गया, जिसका विषय **हमारा सदाचार** रखा गया था। राजस्थान जैन सभा के महामंत्री श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी जयपुर ने इस गोष्ठी की अध्यक्षता की। गोष्ठी में वक्ताओं द्वारा सदाचार के सभी पहलुओं का अनुशीलन किया गया। अध्यक्षीय उद्बोधन के रूप में पाटनीजी ने भी अनेक बिन्दुओं पर छात्रों का ध्यान आकर्षित किया।

चैतन्य सातपुते शास्त्री एवं दीपेश शास्त्री को श्रेष्ठ वक्ता का पुरस्कार दिया गया। गोष्ठी में महाविद्यालय के अधीक्षक पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील का छात्रों के लिए मार्मिक उद्बोधन उल्लेखनीय रहा। गोष्ठी का संचालन हेमन्त आँवा शास्त्री एवं संयोजन चिन्मय शास्त्री पिड़ावा ने किया।

इसी क्रम में रविवार, 28 जुलाई 2002 को तृतीय गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी का विषय **ध्यान : एक अनुशीलन** रखा गया । गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. दीपक जैन ने की। संयोजक अनिलकुमार शास्त्री मुम्बई एवं संचालक धर्मेन्द्र शास्त्री बड़ामलहरा थे। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में उपाध्याय वर्ग से स्वतंत्र जैन तथा शास्त्री वर्ग से अनुपम शास्त्री अमायन को पुरस्कृत किया गया। **ह्न ऋषिराज शास्त्री, मनोज शास्त्री**

## आध्यात्मिक बाल व युवा चेतना शिविर सानन्द सम्पन्न

**अजमेर** : यहाँ श्री वीतराग विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के युवा प्रकोष्ठ द्वारा दिनांक 24 जून से 1 जुलाई 2002 तक अजमेर में आयोजित आध्यात्मिक बाल व युवा चेतना शिविर उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ।

शिविर का भव्य उद्घाटन समाजसेवी श्री भागचंदजी पहाड़िया द्वारा किया गया। इस अवसर पर पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर तथा पण्डित सुनीलकुमारजी 'धवल' भोपाल द्वारा बालबोध पाठमाला एवं निश्चय-व्यवहार विषय पर कक्षायें आयोजित की गईं। शिविर के अन्तिम दिन परीक्षा लेकर सफल शिक्षार्थियों को विशेष एवं सहभागी शिक्षार्थियों को प्रोत्साहन पुरस्कार युवारत्न श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी किशनगढ़ द्वारा समापन समारोह में प्रदान किये गये। समारोह की अध्यक्षता मुमुक्षु मण्डल के अध्यक्ष श्री प्रेमचंदजी जैन ने की।

कार्यक्रम में लगभग 150 बालक एवं 80 युवा, प्रौढ़ एवं महिलाओं ने सोत्साह भाग लेकर धर्मलाभ लिया। **ह्न हीराचन्द बोहरा, मंत्री**

## स्वयंभू एवं महावीर पुरस्कार-2002 हेतु रचनायें आमंत्रित

**जयपुर** : श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र महावीरजी द्वारा संचालित अपभ्रंश अकादमी, जयपुर के वर्ष 2002 के स्वयंभू पुरस्कार हेतु अपभ्रंश साहित्य से सम्बन्धित विषय पर हिन्दी अथवा अंग्रेजी में रचित रचनाओं की चार प्रतियाँ 30 सितम्बर 2002 तक आमंत्रित हैं। इस पुरस्कार में 21001/ ह्न रुपये एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया जायेगा।

प्रबन्धकारिणी कमेटी, दिग. जैन अतिशय क्षेत्र महावीरजी द्वारा संचालित जैनविद्या संस्थान, महावीरजी के वर्ष 2002 के महावीर पुरस्कार हेतु जैनधर्म, दर्शन, इतिहास, साहित्य, संस्कृति आदि से सम्बन्धित किसी विषय की पुस्तक/शोधप्रबन्ध की चार प्रतियाँ दिनांक 30 सितम्बर 2002 तक आमंत्रित हैं। इस पुरस्कार में प्रथम स्थान प्राप्त कृति को 21001/ह्न रुपये एवं प्रशस्ति-पत्र तथा द्वितीय स्थान प्राप्त कृति को 5001/ह्न रुपये एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान कया जायेगा। 31 दिसम्बर 1998 के पश्चात् प्रकाशित कृति ही इस पुरस्कार हेतु भेजी जा सकती है।

नियमावली तथा आवेदन पत्र का प्रारूप प्राप्त करने के लिए अकादमी कार्यालय, दिगम्बर जैन नसियाँ भट्टारकजी, सवाई रामसिंह रोड, जयपुर-302004 से पत्र व्यवहार करें। **ह्न डॉ. कमलचन्द सोगाणी**

## शिखर शिलान्यास महोत्सव सम्पन्न

**जैतपुर कलाँ (आगरा):** यहाँ दिनांक 19 जून को दिग. जैनमंदिर के शिखर का शिलान्यास श्री मनीषकुमारजी पटवारी दिल्ली के करकमलों से हुआ। सम्पूर्ण विधि पण्डित विरागकुमारजी शास्त्री जबलपुर द्वारा सम्पन्न कराई गई तथा सायंकाल आपके ही प्रवचन हुये। **- नीरज जैन**

## जैनपथ प्रदर्शक प्रतियोगिता - 1

प्रश्न 1. अष्टान्हिका पर्व वर्ष में कितनी बार व कब-कब मनाया जाता है?
प्रश्न 2. मध्यलोक की चौड़ाई कितनी है ?
प्रश्न 3. सुमेरु पर्वत किसके बीचों-बीच स्थित है ?
प्रश्न 4. सुमेरु पर्वत की ऊँचाई कितनी है ?
प्रश्न 5. नन्दीश्वर द्वीप कहाँ स्थित है ?
प्रश्न 6. नन्दीश्वर द्वीप में लाल वर्ण के पर्वतों का क्या नाम है ?
प्रश्न 7. नन्दीश्वर द्वीप की पूर्व दिशा में कितने दधिमुख पर्वत हैं ?
प्रश्न 8. नन्दीश्वर द्वीप में हमेशा कौनसी जाति के देव रहते हैं ?
प्रश्न 9. विजयमेरु कहाँ स्थित है ?
प्रश्न 10. तीनलोक में कितने अकृत्रिम चैत्यालय हैं ?

**निर्देश :** कृपया उक्त सभी प्रश्नों के उत्तर सादे कागज पर या पोस्टकार्ड पर लिखकर भेजें। उत्तर भेजने की अन्तिम तिथि 20 अगस्त 2002 है।

**प्रविष्टियाँ भेजने का पता:** श्री राजमलजी जैन, 9 चैतन्य सदन, तिलक कॉलोनी, हिरणमगरी सैक्टर-3, उदयपुर (राज.)।

101/-रुपये का प्रथम पुरस्कार तथा 51-51 रुपये के दो द्वितीय पुरस्कार हैं। सही जवाब भेजनेवाले उत्तरदाताओं का चयन ड्रॉ पद्धति से निकाला जायेगा। **- प्रस्तुति : सीमा जैन, उदयपुर**

## बाल संस्कार शिविर सानन्द सम्पन्न

**फिरोजाबाद (उ.प्र.) :** आचार्य कुन्दकुन्द नैतिक शिक्षा समिति उत्तर प्रदेश द्वारा 16 से 23 जून 2002 तक श्री छदामीलाल दि. जैन मन्दिर फिरोजाबाद में बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में झण्डारोहण श्री कश्मीरचन्द महावीरप्रसादजी जैन ने एवं उद्घाटन श्री अरुण जैन (पीली कोठी) ने किया। सभा की अध्यक्षता श्री अनिल जैन (रतन घी डिपो) शिकोहाबाद ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री रमेशचन्द जैन बैरिस्टर, श्री महावीर जैन मामा, श्री विजयकुमार जैन 'देवता ग्लास' तथा पाण्डे राजकुमारजी जैन उपस्थित थे।

शिविर में पण्डित प्रकाशचन्दजी शकारिया मैनपुरी, पण्डित अशोकजी सिरसागंज, पण्डित अजितकुमारजी फिरोजाबाद, पण्डित वीरेन्द्रवीरजी फिरोजाबाद के मार्मिक प्रवचन हुये।

शिविर में विभिन्न वर्गों की 10 कक्षाओं में पण्डित योगेशजी जैन अलीगंज, पण्डित विरागकुमारजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित चेतनजी शास्त्री नलखेड़ा, पण्डित शैलेषजी शास्त्री जबेरा, पण्डित सोनू शास्त्री खतौली, पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री नागपुर, पण्डित अनन्तवीरजी फिरोजाबाद, पण्डित अनुरागजी फिरोजाबाद, श्रीमती सरोजलता ने अध्यापन कार्य किया ।

समापन समारोह की अध्यक्षता प्रकाशचन्दजी ज्योतिर्विद् ने की। तथा मुख्य अतिथि अजय जैन एडवोकेट, विशिष्ट अतिथि शोभित जैन चन्द्रा पेट्रोल पम्प थे। डॉ. योगेश जैन, प्रमोदशरणजी कायमगंज, महेशचन्द जैन एडवोकेट ने विचार प्रकट किये।

शिविर शिरोमणि बालक आराध्य जैन जसवंतनगर एवं शिविर शिरोमणि बालिका मानसी जैन को गोल्ड मेडल से पुरस्कृत किया गया।

शिविर में कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन तथा अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन मैनपुरी का विशेष सहयोग रहा। शिविर में आगरा मंडल के 36 स्थानों के 463 बच्चों ने भाग लिया। सभी उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को पुरस्कार दिये गये। कार्यक्रम पं. नवीनजी पोद्दार, पं. विपिनजी सिंघई, पं. सौरभजी पाण्डे के संयोजन में सम्पन्न हुए।

आ. कुन्दकुन्द नैतिक शिक्षा-समिति के अध्यक्ष डॉ. योगेश जैन ने आगामी वर्ष में चल शिक्षण शिविर लगाने की घोषणा की।

## 'वर्धमान प्रभावना' की प्रति भेंट

**उदयपुर** : भ. महावीर के 2600 वें जन्मोत्सव वर्ष पर अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा उदयपुर एवं मुमुक्षु मण्डल उदयपुर द्वारा प्रकाशित स्मारिका **वर्धमान प्रभावना** सांसद डॉ. गिरिजा व्यास को उदयपुर में उनके निवासस्थान पर भेंट की गई।

इस प्रसंग पर स्मारिका के प्रधान सम्पादक डॉ. महावीर प्रसाद जैन तथा सम्पादक हेमन्तकुमार शास्त्री व जिनेन्द्रकुमार शास्त्री उपस्थित थे, साथ ही मुमुक्षु मण्डल व फैडरेशन की मंत्री आशा पाण्ड्या तथा सहमंत्री प्रतिभा जैन भी उपस्थित थीं। स्मारिका में भगवान महावीर के जीवन-दर्शन से सम्बन्धित विशिष्ट विद्वानों के लेख एवं कविताएँ संकलित हैं।

**ह्न राजकुमारी अखावत**

## लघु शिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

**नातेपुते (महा.) :** यहाँ दिनांक 5 मई 2002 से 20 जून 2002 तक पण्डित जितेन्द्रजी राठी शास्त्री एवं स्थानीय विद्वान पण्डित शीतलजी दोशी द्वारा महती धर्मप्रभावना हुई।

प्रतिदिन प्रात: पूजनोपरांत पण्डित शीतलजी के कार्तिकेयानुप्रेक्षा पर प्रवचन हुये । पण्डित जितेन्द्रजी द्वारा प्रात: एवं दोपहर में भक्तामर, द्रव्यसंग्रह एवं तत्त्वार्थसूत्र पर कक्षा चलाई गई ।

सायंकाल राठीजी द्वारा बालकक्षा के पश्चात् रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर प्रवचन हुये। रात्रि में अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

अंतिम दिन सभी विषयों की परीक्षायें ली गईं । उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को श्री भारतजी गांधी एवं डॉ. व्होरा द्वारा पुरस्कृत किया गया।

शिविर में संपूर्ण स्थानीय समाज ने उत्साह से भाग लेकर धर्मलाभ लिया। स्थानीय समाज के ट्रस्टीगण व कार्यकर्त्ताओं का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ। इस कार्यक्रम से प्रभावित होकर स्थानीय ट्रस्टी वर्ग एवं समाज ने पण्डित टोडरमल स्मारक से एक स्थायी विद्वान की मांग की है, जिससे वहाँ नियमित स्वाध्याय, पाठशालादि चलते रहें। **ह्न भारत तलकचंद गांधी**

## पाठशाला निरीक्षण सम्पन्न

**इन्दौर** : श्री टोडरमल दि. जैन सि. महाविद्यालय, जयपुर के छात्र विद्वान पण्डित सुधारकजी इंडी शास्त्री एवं पण्डित संतोषजी सावजी अंबड द्वारा इन्दौर के पंचबालयति जिनालय, जनता कॉलोनी, द्रविड़ नगर, राज मोहल्ला, रामाशाह मंदिर, काँच मंदिर आदि तथा उज्जैन, महिदपुर, बड़नगर, रतलाम, मन्दसौर, कुचड़ौद, खण्डवा आदि स्थानों की पाठशालाओं का निरीक्षण किया गया ।

निरीक्षण के दौरान विद्वानद्वय ने प्रात:, दोपहर एवं सायंकाल प्रवचन, प्रौढ़ कक्षा, बाल कक्षाओं का आयोजन किया साथ ही ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण भी किया। कुछ स्थानों पर शान्ति विधान एवं बीस तीर्थंकर विधान कराये गये; जिससे समाज में महती धर्मप्रभावना हुई। विद्वानों ने समाज को आज के आधुनिक जीवन में पाठशाला का महत्त्व समझाया तथा उन्हें पाठशालाओं को सुचारूरूप से संचालन की प्रेरणा दी।

## बाल संस्कार एवं पूजन प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

**राघौगढ़** : मुमुक्षु मण्डल राघौगढ़ एवं दि. जैन महासमिति शाखा-राघौगढ़ के तत्त्वावधान में दिनांक 22 जून से 28 जून 2002 तक बाल संस्कार एवं पूजन प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। शिविर के अन्तर्गत बाल कक्षाएँ, प्रौढ़ कक्षाएँ, प्रवचन एवं पूजन प्रशिक्षण कक्षाओं का आयोजन पण्डित अशोककुमारजी मांगुलकर शास्त्री ने किया ।

स्थानीय महिलाओं के आग्रह पर काफी समय से बंद कक्षाओं को पुन: प्रारंभ किया गया। शिविर में पुरस्कार श्री विमलचंद एंड संस एवं श्री राजकुमारजी जैन के सहयोग से वितरित किये गये। **ह्न प्रेमचन्द्र भारिल्ल**

तत्त्वचर्चा

# समयसार का सार 51

गतांक से आगे

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

पण्डित बनारसीदासजी ने कहा है कि भेदज्ञान की भावना अविरल भानी चाहिए; क्योंकि भेदज्ञान की भावना भाने को तबतक भला माना गया है जबतक कि मुक्ति की प्राप्ति नहीं हो जाती है।

बनारसीदासजी का इस आशय का छन्द इसप्रकार है –

(दोहा)

भेदग्यान तबलौं भलौ, जबलौं मुकति न होइ।
परमज्योति परगट जहाँ, तहाँ न विकलप कोई।।

भेदज्ञान तबतक भला है, जबतक कि मुक्ति की प्राप्ति नहीं हो जाती। मुक्ति अर्थात् मिथ्यात्व से मुक्ति, असंयम से मुक्ति, अज्ञान से मुक्ति, देह से मुक्ति। जबतक दृष्टिमुक्ति, प्रमादमुक्ति, मोहमुक्ति, देहमुक्ति न हो; आशय यह है कि जबतक आत्मा पूर्णरूप से आत्मा में लीन न हो, तबतक भेदज्ञान की अविरल धारा बहती रहनी चाहिए।

इसी को इस संस्कृत कलश में दृढ़ कराया है –

(मालिनी)

निजमहिमरतानां भेदविज्ञानशक्त्या,
भवति नियतमेषां शुद्धतत्त्वोपलंभः।
अचलितमखिलान्यद्रव्यदूरे स्थितानां,
भवति सति च तस्मिन्नक्षयः कर्ममोक्षः।।128।।

जो भेदज्ञान की शक्ति से अपनी महिमा में लीन रहते हैं; उन्हें नियम से शुद्धतत्त्व की उपलब्धि होती है; इसप्रकार आचार्य पूर्ण विश्वास दे रहे हैं कि इसके अलावा और कोई उपाय नहीं है। इसका पद्यानुवाद इसप्रकार है –

(रोला)

भेदज्ञान की शक्ति से निजमहिमारत को,
शुद्धतत्त्व की उपलब्धि निश्चित हो जावे।
शुद्धतत्त्व की उपलब्धि होने पर उसके,
अतिशीघ्र ही सब कर्मों का क्षय हो जावे।।

यदि शुद्धतत्त्व की उपलब्धि हो गई तो सम्पूर्ण कर्म स्वयमेव भाग जायेंगे; क्योंकि इनमें एकत्वबुद्धि के कारण ही ये कर्म बंधते हैं। जब कर्म बंध का मूल कारण एकत्वबुद्धि ही नहीं रही तो सारे कर्म स्वयमेव विनाश को प्राप्त होंगे। अतः हे भव्य जीवो –

(रोला)

आत्मतत्त्व की उपलब्धि हो भेदज्ञान से,
आत्मतत्त्व की उपलब्धि से संवर होता।
इसीलिए तो सच्चे दिल से निजप्रति करना,
अरे भव्यजन ! भव्यभावना भेदज्ञान की।।129।।

जबतक इस जीव का ज्ञान सम्पूर्ण जगत से हटकर ज्ञान (आत्मा) में स्थिर न हो जावे, तबतक इस जीव को सच्चे मन से बिना विराम के भेदज्ञान की अविरल भावना भानी चाहिए; क्योंकि आजतक जितने भी जीव सिद्ध दशा को प्राप्त हुए हैं; वे सब भेदविज्ञान के बल से ही सिद्धदशा को प्राप्त हुए हैं एवं आजतक जितने भी जीव संसार सागर में भटक रहे हैं; वे सब भेदविज्ञान के अभाव के कारण ही भटक रहे हैं। इसे स्पष्ट करनेवाला प्रसिद्ध कलश इसप्रकार है –

(अनुष्टुभ्)

भेदविज्ञानतः सिद्धाः सिद्धाः ये किल केचन।
अस्यैवाभावतो बद्धाःबद्धाः ये किल केचन।।131।।

इस का पद्यानुवाद इसप्रकार है –

(रोला)

अब तक जो भी हुए सिद्ध या आगे होंगे,
महिमा जानो एकमात्र सब भेदज्ञान की।
और जीव जो भटक रहे वे भवसागर में,
भेदज्ञान के ही अभाव से भटक रहे हैं।।

भेदविज्ञान की महिमा इससे अधिक और क्या बताई जा सकती है कि आजतक जितने भी जीव मोक्ष गये हैं, वे सब भेदविज्ञान से ही गये हैं और जो जीव कर्मों से बंधे हैं, संसार में अनादि से अनंत दुःख उठा रहे हैं; वे सब भेदविज्ञान के अभाव से ही उठा रहे हैं।

अतः एकमात्र भेदविज्ञान ही करने योग्य कार्य है, कर्त्तव्य है; यही कारण है आचार्यदेव समयसार के प्रथम अधिकार से यहाँ तक भेदविज्ञान को ही नचाते आ रहे हैं। आचार्यदेव ने पूर्व में प्रतिज्ञा की थी कि – 'मैं तुम्हें एकत्व–विभक्त भगवान आत्मा को समझाऊँगा।' विभक्त भगवान आत्मा की भावना ही भेदविज्ञान की भावना है।

विभक्त आत्मा अर्थात् 'मैं पर से भिन्न हूँ' – इसे गम्भीरता से समझना अत्यंत आवश्यक है। 'मैं पर से भिन्न हूँ' – इसे समझने में रंचमात्र भी भूल हुई तो हमारा प्रयोजन सधनेवाला नहीं है। राग की एक कणिका को भी यदि इस जीव ने निजरूप माना, तो भी इस जीव को मुक्ति नहीं होगी। इसे गुरुदेव की भाषा में इसप्रकार स्पष्ट कर सकते हैं कि जिस भाव से तीर्थंकर नामकर्म प्रकृति का बंध हो, वह भाव मैं हूँ, मेरा है, मैं उसका कर्त्ता–भोक्ता हूँ, वह धर्म है, सुख है – ऐसी उस भाव में एकत्व, ममत्व, कर्त्तृत्व, भोक्तृत्वबुद्धि आ जाए तो हमारा प्रयोजन कदापि सधनेवाला नहीं है। पर में एकत्वबुद्धिरूप परिणाम जहाँ भी है, विनाश का कारण है, संसार का कारण है। चाहे एकत्वबुद्धि स्त्री–पुत्रादि में हो, चाहे राग में हो; दोनों ही आत्मा के लिए घातक हैं। जैनदर्शन में वस्तुस्वरूप संबन्धित भूल में क्षमा करने की व्यवस्था नहीं है। भगवान भी किसी को क्षमा नहीं कर सकते हैं। कोई कहे कि हम तो नासमझ हैं, हमें माफ कीजिए।

वस्तु स्वभाव में यह नहीं चलता; क्योंकि अग्नि पर हाथ रखे तो क्या अग्नि इसकी नासमझी का ध्यान रखते हुए इसको माफ कर देगी ? – ऐसे ही जैनदर्शन में किसी को माफ करने की कोई व्यवस्था नहीं है।

सर्वप्रथम पर कौन है और मैं कौन हूँ ? इसका सत्य निर्णय करना अत्यंत आवश्यक है। यह निर्णय करने का जो प्रयास है, अध्ययन, मनन, चिंतन, पठन–पाठन है; वही भेदविज्ञान है। जब यह दृढ़ निश्चय हो जाय की ये मैं हूँ एवं ये पर हैं। इस जीव के उपयोग का विषय निरंतर आत्मा ही बनता रहे; जिससे यह दृढ़ निश्चय पुराना न पड़ जाए, तबतक 'ये मैं हूँ' और 'ये पर हैं' – इसप्रकार की भेदविज्ञान की भावना भानी चाहिए।

इस अर्थ का पोषक कलशकाव्य इसप्रकार है –

( मालिनी )

अवतरित न यावद् वृत्तिमत्यन्तवेगा,
दनवमपरभाव त्याग दृष्टान्त दृष्टिः।
झटिति सकलभावैरन्यदीयैर्विमुक्ता,
स्वयमियमनुभूतिस्तावदाविर्बभूव ।।29।।

हिन्दी पद्यानुवाद से इस कलश का अर्थ अत्यन्त स्पष्ट हो जाता है –

( हरिगीत )

परभाव के परित्याग की दृष्टि पुरानी न पड़े,
अर जबतलक हे आत्मन् वृत्ति न हो अतिबलवती।
व्यतिरिक्त जो परभाव से वह आतमा अतिशीघ्र ही,
अनुभूति में उतरा अरे चैतन्यमय वह स्वयं ही।।29।।

आचार्य कहते हैं कि पर से मेरा कुछ भी संबंध नहीं है, रागादि मेरे कुछ नहीं, धर्मादि मेरे कुछ नहीं, क्रोधादि मेरे कुछ नहीं; मैं एक ज्ञायक भाव हूँ – इसप्रकार भेदविज्ञान की भावना अब बहुत बलवती हो गई है; अतः मध्य में ही मत रुक जाना, नहीं तो यह भावना फीकी पड़ जाएगी। इस भावना का जो परिपाक हुआ है, वह पुराना न पड़े अर्थात् यह निरंतर बना रहे। यदि यह भावना निरंतर नहीं बनी रहेगी तो इस भावना के कारण जो पंचेन्द्रियों के विषय मंद हो गए थे; वे फिर तेजी से इस भावना के अभाव में जागृत हो जायेंगे। जबतक ये विषय–कषाय दबे पड़े हैं, तबतक आत्मानुभव कर लेना चाहिए; तभी इस जीव का प्रयोजन सधेगा, अन्यथा एकबार अवसर चूक जाने पर पुनः अवसर प्राप्त होना अत्यन्त दुर्लभ है।

हम इसे इस उदाहरण से सरलता से समझ सकते हैं – यदि किसी कार्य की उपयोगिता बताई जाती है, अनिवार्यता बताई जाती है, देश की आवश्यकता है, धर्म की रक्षा का प्रश्न है – ऐसी घोषणायें की जाती हैं तो भावना के वेग में बहकर माँ–बहिनें अपने गहने देने के लिए तैयार हो जाती हैं। कोई अपना मकान लिखवा देता है तो कोई अपनी सारी सम्पत्ति दान कर देता है। इसप्रकार लोग जब भावना के वेग में बहते हैं; तब वह कार्य तुरन्त सध जाता है। यदि उस वक्त आर्थिक सहयोग स्वीकार न करके छः घंटे बाद मांगते हैं तो उस भावना के बहाव के टूटने के कारण आधे व्यक्ति आर्थिक सहयोग नहीं देते हैं। दृष्टि पुरानी पड़े अर्थात् जबतक लोभ दृष्टि बलवती न हो, भावना का निरंतर बहाव हो; तबतक उस कार्य को सम्पन्न कर लेना चाहिए। यदि यह बात बहुत पुरानी पड़ गई तो वह कार्य सिद्ध होनेवाला नहीं है। ऐसा ही इस जीव के परिणामों के संदर्भ में भी है।

प्रतिदिन इस जीव को भेदविज्ञान की भावना को इतना प्रबल करना होगा कि जब वह परिपाक पर पहुँचे; तब उसका लाभ उठाकर भगवान आत्मा में गोता लगाना होगा; तभी वह अनुभूति का एक क्षण दुर्लभता से आएगा। 15 दिन में यदि एक बार अनुभूति होने लगे तो समझ लेना कि यह अणुव्रती हो जाएगा, अन्तर्मुहूर्त में एक बार अनुभूति हो तो यह महाव्रती हो जाएगा; एक बार अनुभूति हो जाय और आत्मानुभव से लौटकर बाहर नहीं आए तो केवलज्ञानी हो जाएगा।

मार्ग एक ही है, प्रक्रिया एक ही है। लौकिक अध्ययन में जिसप्रकार चौथी का पाठ्यक्रम पृथक्, पाँचवीं का पाठ्यक्रम पृथक् होता है; इसप्रकार की स्थिति मुक्ति के मार्ग में नहीं है। अंतर में निरंतर धाराप्रवाह रूप से भेदविज्ञान की भावना को भाना है, इसी का नाम धर्म है।

संवराधिकार अर्थात् धर्म का आरम्भ। धर्म का आरम्भ भेदविज्ञान की प्रबल भावना से ही होता है। किसप्रकार भेदविज्ञान की प्रबल भावना से धर्म का आरम्भ होता है ? इसी का विवरण संवराधिकार में आद्योपांत है।

संवराधिकार में अबतक भेदविज्ञान को प्रबल करनेवाली भावना की चर्चा की। अब आचार्य तर्क और युक्ति से भेदविज्ञान की उपयोगिता सिद्ध करेंगे। इस प्रकरण में आचार्य कहते हैं कि हे आत्मन् ! पर अर्थात् भावकर्म, द्रव्यकर्म, नोकर्म अर्थात् 29 प्रकार के भावों से, स्वयं को भिन्न जान। तर्क और युक्तियों से परद्रव्यों से आत्मा भिन्न है – ऐसा जानना ही इस भेदविज्ञान के अभिनंदन के अधिकार का उद्देश्य है।

मात्र परद्रव्य मेरा नहीं है – ऐसा जानने से प्रयोजन की सिद्धि होनेवाली नहीं है। परद्रव्य मेरा क्यों नहीं है, वह मेरा कैसे नहीं है, परद्रव्य को मेरा मानने में क्या आपत्ति है ? इन मूलभूत प्रश्नों का उत्तर प्राप्त होना अत्यंत आवश्यक है।

यदि इन प्रश्नों का उत्तर हमारे पास नहीं है तो अकेले 'परद्रव्य मेरा नहीं है' – ऐसा कहने से भेदविज्ञान की भावना प्रबल होनेवाली नहीं है। (Øe'k%)

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

## अष्टान्हिका पर्व सानन्द सम्पन्न

**1. मेरठ :** यहाँ शास्त्रीनगर स्थित जिनमंदिर में श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया गया। विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित अमित शास्त्री फुटेरा के निर्देशन में सम्पन्न हुये। प्रतिदिन पण्डित विकास शास्त्री मौ के पंचपरमेष्ठी के स्वरूप पर सारगर्भित प्रवचन हुये। रात्रि में भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

**2. अजमेर :** यहाँ श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के अन्तर्गत आषाढ़ माह की अष्टान्हिका के अवसर पर श्री सीमन्धर जिनालय में पंचमेरू नन्दीश्वर विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर नित्य-नियमपूजन एवं विधान के पश्चात् प्रतिदिन प्रात: डॉ. कपूरचन्दजी कौशल भोपाल के समयसार पर प्रवचन, दोपहर में पूज्य गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन तथा रात्रि में डॉ. कपूरचन्दजी के मोक्षमार्ग प्रकाशक पर प्रवचन हुये। अन्तिम दिन ट्रस्ट की ओर से सभी लोगों को एक-एक जिनवाणी भेंट स्वरूप प्रदान की गई। **- विजयकुमार पाण्ड्या**

**3. जयपुर :** यहाँ श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैनमंदिर वासगोधान, जौहरी बाजार में दिनांक 17 जुलाई से 24 जुलाई 2002 तक श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया गया।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित संजीवकुमारजी गोधा द्वारा सम्पन्न कराये गये। निर्देशन पण्डित रतनलालजी नृपत्या का रहा। मंगल कलश की स्थापना श्री जयकुमारजी गोधा ने की।

प्रतिदिन सायंकाल पण्डित संजीवकुमारजी गोधा के सिद्धचक्र विधान की जयमाला पर सारगर्भित प्रवचन हुये। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। दिनांक 25 जुलाई को शान्तियज्ञ एवं पश्चात् जिनेन्द्र अभिषेक का कार्यक्रम रखा गया। दिनांक 28 जुलाई को श्री रतनलालजी की ओर से शान्तिविधान का आयोजन किया गया। **- विजयकुमार गोधा**

## वैराग्य समाचार

**शिरडशहापुर (महाराष्ट्र) :** श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय जयपुर के भूतपूर्व छात्र श्री विवेकजी महाजन शास्त्री के पिता श्री कस्तूरचंदजी महाजन का दिनांक 6 जुलाई 2002 को, 70 वर्ष की आयु में सल्लेखनापूर्वक समाधिमरण हुआ। आपका संपूर्ण जीवन वैराग्यभावना से ओतप्रोत था। आप 'दयचंदानुज' नाम से संपूर्ण महाराष्ट्र में प्रसिद्ध थे। वैराग्य भावना से प्रेरित होकर आपने समयसार, द्रव्यसंग्रह आदि अनेक ग्रंथों का मराठी में पद्यानुवाद के साथ-साथ लगभग 300 से भी अधिक आध्यात्मिक काव्य, भजन तथा नाटक, पूजनों की रचना की। आपने आजीवन अनेक व्रतों का निरतिचार पालन किया।

आपने दिनांक 4 जुलाई को स्वप्रेरणा से चारों आहारों का त्यागपूर्वक सल्लेखना व्रत लेकर समाधिमरण किया। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान को 51-51 रुपये प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद !

दिवंगत आत्मा शीघ्र ही मुक्ति को प्राप्त हो - यही मंगल कामना है।

## अगस्त माह में आनेवाली 24 तीर्थंकरों के पंचकल्याणकों की तिथियाँ

| | | |
|---|---|---|
| **3 अगस्त** | - | भगवान कुन्थुनाथ गर्भकल्याणक |
| **10 अगस्त** | - | भगवान सुमतिनाथ गर्भकल्याणक |
| **13 अगस्त** | - | भगवान नेमिनाथ जन्म, तप एवं भगवान पार्श्वनाथ मोक्ष कल्याणक |
| **21 अगस्त** | - | भगवान श्रेयांसनाथ मोक्षकल्याणक |
| **23 अगस्त** | - | सोलहकारण पर्व प्रारंभ |
| **30 अगस्त** | - | भगवान शान्तिनाथ गर्भकल्याणक |

## परिचय-सम्मेलन

**जयपुर :** श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय की रजत जयन्ती के अवसर पर दिनांक 14 जुलाई 2002 को अतिशय क्षेत्र चूलगिरि (पर्वत) पर नवागन्तुक छात्र परिचय सम्मेलन का आयोजन किया गया।

सम्मेलन की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल ने की। मुख्य अतिथि के रूप में ब्र. अभिनन्दनजी खनियांधाना, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, श्री कैलाशचन्दजी सेठी, श्री मोहनलालजी सेठी, श्री शान्तिलालजी अलवरवाले एवं श्री ताराचन्दजी सौगानी उपस्थित थे। इस अवसर पर उप-अधीक्षक पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री ने महाविद्यालय का परिचय दिया।

परिचय सम्मेलन में सभी नवागन्तुक छात्रों ने नाम, पिता का नाम, गाँव का नाम, महाविद्यालय में प्रवेश लेने का कारण, रुचि, उद्देश्य आदि बिन्दुओं से अपना परिचय दिया।

सम्मेलन के दौरान सभी छात्रों ने आजीवन अष्ट-मूलगुण धारण करने एवं प्रतिदिन देवदर्शन की प्रतिज्ञा ली। वहाँ सभी छात्रों को सदाचारमय जीवन जीने की प्रेरणा दी गई। इस अवसर पर सभी छात्रों ने चूलगिरि अतिशय क्षेत्र पर वंदना एवं पूजन के अतिरिक्त आदर्शनगर स्थित जिनमंदिर के दर्शन का लाभ भी लिया।

समस्त कार्यक्रम का संयोजन संतोष साहूजी एवं संचालन संतोषजी मिन्चे ने किया। सम्मेलन का समस्त कार्यभार सकल शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों ने संभाला; एतदर्थ उन्हें धन्यवाद ! **- मनोज जैन शास्त्री**

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) **अगस्त (प्रथम) 2002**
**आई. आर. /** R. J. **3002/02**

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, एम.ए. (जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्मदर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

*यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -*
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
**फोन :** (0141) 705581, 707458
**तार :** त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 704127